12

आदमी जिसका जीवन श्रापित हुआ था

(2 राजाओं 4:14, 27, 29, 42, 43; 5:5, 10, 14-16, 19-27; 6:15; 8:4, 5)

नामान की चंगाई का विवरण कई पहलुओं से शानदार है, जिसमें इसकी लम्बाई भी शामिल है। 2 राजाओं का पूरा पांचवां अध्याय इसी घटना के लिए दिया गया है। इस कहानी से हमने दो सबक बनाए हैं पर उसमें एक अर्थात गेहजी पर केन्द्रित शृंखला अभी बाकी है। अध्याय 5 को दो आदमियों यानी नामान और गेहजी के बीच अन्तर के रूप में विचारा जा सकता है। ''नामान आरम्भ तो कोढ़ी के रूप में करता है पर अन्त प्रभु के सेवक के रूप में। गेहजी का आरम्भ सेवक के रूप में होता है और उसके जीवन की समाप्ति कोढ़ी के रूप में होती है।''[1]

गेहजी की खूबियां
(4:14, 27, 29, 42, 43; 6:15; 8:4, 5)

''गेहजी'' नाम का अर्थ ''दर्शन की कमी'' हो सकता है।[2] इसके आगे गेहजी पर हमारे पास कोई पृष्ठभूमि नहीं है। हम इतना भी नहीं जानते कि एलीशा की सेवा उसने कब और कहां आरम्भ की। एक सम्भावना है कि एलीशा ने उसे नबियों के चेलों की किसी पाठशाला से चुना होगा। शायद वह सबसे होशियार यानी उन छात्रों में सबसे मेधावी था। जो भी हो उसे एलीशा के साथ घूमने और जिस प्रकार एलीशा ने एलिय्याह से सीखा था वैसे ही उसके साथ रहकर सीखने का जीवन में एक ही बार मिलने वाला अवसर मिला था। यदि गेहजी उस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाता तो आज हम इस्राएल के उत्तरी राज्य के *तीन* महान नबियों एलिय्याह, एलीशा और गेहजी की बात कर रहे होते।

अब तक अपने अध्ययन में हम ने गेहजी की क्षमता देखी है। गेहजी की दूरदर्शिता उसके उस निष्कर्ष में देखी जाती है, जिसमें शूनेमिन स्त्री ने पुत्र की इच्छा की (4:14)। गेहजी की निर्भरता इस तथ्य में दिखाई गई है कि एलीशा ने उस पर इतना भरोसा किया कि लड़के की मृत्यु के समय उसे अपने साथ रखा (4:29)। उसे अपने स्वामी के बारे में बताने की राजा की आज्ञा में गेहाज़ी की प्रतिष्ठा स्पष्ट दिखाई देती है (8:4, 5)।

इसके साथ ही गेहजी की आत्मिक अपरिपक्वता भी कई बार दिखाई देती है। गेहजी किसी दुखी माता को डांटने को तैयार था (4:27)। गेहजी ही होगा जिसने खाने की छोटी बोरी से एक सौ लोगों को खिलाने को कहे जाने पर संदेह किया होगा (4:42, 43)। गेहजी ही होगा जो अरामी सेना को देखकर भय से सुन्न हो गया था (6:15)।[3]

परन्तु गेहजी की सब कमियों को क्षमा किया और भुलाया जा सकता था। उसकी असफलताएं यीशु के प्रेरितों की असफलताओं से बड़ी नहीं थीं, जिनमें से अधिकतर ने महान आत्मिक अगुवे

बनना था। अन्त में गेहजी का भविष्य कुछ कठिन परीक्षाओं के परिणाम पर निर्भर था, जिन में वह सेवक बुरी तरह से असफल हो गया।

गेहजी की परीक्षाएं (5:5, 10, 14-16, 19-26)

तरस की परीक्षा

गेहजी की पहली कठिन परीक्षा तरस की परीक्षा थी। पिछले पाठ में हम ने सुझाव दिया था कि गेहजी नामान को यरदन में डुबकी लगाने के लिए कहने के लिए एलीशा का भेजा हुआ दूत था (5:10)। गेहजी की आंखों के सामने पड़ी उस सम्पत्ति की चमक की कल्पना करें जब वह घर से बाहर आया। शायद उसका दिल सोने, चांदी और नामान के सेवकों के हाथों में, महंगे वस्त्र देखकर तेज़ धड़कने लगा (5:5ख)। वह उस समय बहुत निराश हुआ होगा, जब जानवरों के ऊपर फिर से उस धन को लाद दिया गया और नामान की शोभा यात्रा यरदन की ओर पूर्व में चल पड़ी।

उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, जब कुछ दिनों के बाद अपना ख़जाना लेकर नामान फिर लौट आया (5:15)। परन्तु जब उस सिपाही ने एलीशा को मनाने की कोशिश की, तो गेहजी की व्याकुलता बढ़ गई तब नबी ने उन्हें लेने से इनकार कर दिया (5:16क)। मैं गेहजी के मन में आने वाले विचारों की कल्पना कर सकता हूं: ''यदि प्रतिफल का कोई हकदार है तो वह हम ही हैं और हम से बढ़कर किसी और को सहायता की आवश्यकता नहीं है। हमारी अल्मारी खाली है और एलीशा नये कपड़ों का इस्तेमाल कर सकता है। मैं भी तो कर सकता हूं! इसके अलावा नबियों की पाठशालाओं की आवश्यकताएं नहीं हैं? मुझे यकीन है की इस काफ़िर के लिए: 80,000 कुछ भी नहीं हैं, पर उस भलाई का ध्यान करें, जो इससे निकल सकती हैं। मेरा स्वामी क्या सोच रहा है?'' तौभी एलीशा अपनी बात पर अड़ा रहा (5:16ख)। सो नामान का कारवां आगे निकल गया (5:19ख)।

परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखक ने प्रकट किया है कि उस शोभा यात्रा को निकलते देख गेहजी के मन में क्या आ रहा था: ''मेरे स्वामी ने तो उस अरामी नामान को ऐसा ही छोड़ दिया है कि जो वह ले आया था उसको उसने न लिया'' (5:20क)। ''छोड़ दिया'' शब्द पर ध्यान दें: ''उस अरामी नामान को ऐसे ही *छोड़ दिया* है।'' गेहजी के लिए नामान अभी भी घृणित शत्रु यानी दुश्मन था ''जिसने छोटी यहूदी लड़कियां अगवा की थीं और एक कोढ़ी जिसे अलग किया जाना और मरने के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए था।''[4] गेहजी के दिमाग में यह था कि नामान सज़ा का हकदार है और एलीशा को उस से जो कुछ भी पेश किया जाता है बल्कि उससे भी अधिक लेना चाहिए था। इसके बजाय नबी ने (जैसा हम कहते हैं) उसे आसानी से छोड़ दिया।

गेहजी तरस की परीक्षा में फेल हो गया। इस कहानी का एक उद्देश्य नि:संदेह यहूदियों को यह सिखाना था कि उन्हें उन लोगों पर तरस करना चाहिए, जिनके जीवनों में त्रासदी है, वे चाहे कैसे भी रहे हों या किसी भी देश के क्यों न हों। परन्तु यहूदियों के लिए यह सबक सीखना बड़ा कठिन था (देखें लूका 4:27, 28)। नये नियम में यीशु ने ज़ोर दिया कि परमेश्वर तरस चाहता है

(मत्ती 9:13)। बार-बार कहा गया है कि ''यीशु ने तरस खाया'' (मत्ती 20:34; मरकुस 1:41)। पौलुस ने लिखा, ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं की नाईं जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, ... धारण करो'' (कुलुस्सियों 3:12)।

लूका 10 में यीशु ने एक याजक और एक लेवी के बारे में बताया जिनकी तरस पर परीक्षा हुई और वह उस परीक्षा में फेल हो गए (आयतें 30-32)। फिर उसने एक सामरी के बारे में बताया जिसने वही परीक्षा पास कर ली (आयतें 33-35)। आपकी और मेरी तरस की परीक्षा रोज होती है; हम ज़रूरतमंद लोगों से घिरे होते हैं। परमेश्वर हमारी खुदगर्ज और ''दूसरी ओर चले जाने'' वाले न बनने में बल्कि जरूरतमंदों को सहायतापूर्ण और प्रेम भरे ढंग से उत्तर देने में सहायता करें (गलातियों 6:10; इफिसियों 4:28ख)।

ईमानदारी की परीक्षा

गेहजी ने फैसला किया कि यदि एलीशा नामान को उसके खज़ाने से मुक्त नहीं करता तो वह कर देगा। उसने सोचा, ''परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ मैं उसके पीछे दौड़कर उस से कुछ न कुछ ले लूंगा'' (2 राजाओं 5:20)। ''यहोवा के जीवन की शपथ'' (आयत 16 से तुलना करें) शपथ का गेहजी का इस्तेमाल परेशान करने वाला है क्योंकि उसने अपने झूठ और फरेब को सही ठहराने के लिए परमेश्वर के पवित्र नाम का इस्तेमाल किया। मुझे आज के उन लोगों का ध्यान आता है जो उस पवित्र नाम के लिए थोड़ी सी या नामात्र श्रद्धा के साथ अपने भाषण बोलने के लिए परमेश्वर के नाम का इस्तेमाल करते हैं। परमेश्वर का नाम ''पवित्र रखा जाना'' आवश्यक है (मत्ती 6:9; AB); यानी इसे लापरवाही से या ओछेपन से नहीं लिया जाना चाहिए (देखें निर्गमन 20:7)।

नामान का दल निकल चुका था (2 राजाओं 5:19ख), इतना बड़ा दल जिसमें कुछ लोग पैदल भी थे, धीरे-धीरे चल रहा होगा। यदि गेहजी भाग कर उन के पीछे जाता तो वह उन्हें पकड़ सकता था। ''तब गेहजी नामान के पीछे दौड़ा'' (5:21क)।

नामान ने गेहजी को अपना पीछा करते देखा और कारवां रोक लिया। आयत 21ख कहती है कि ''वह उससे मिलने को रथ से उतर पड़ा।'' इस विलक्षण अगुवे में नाटकीय बदलाव का एक और प्रदर्शन यहां मिलता है। यरदन नदी के अपने अनुभव से पहले उसे लगा होगा कि एक अदने से सेवक का अभिवादन करने के लिए अपने रथ से उतरना ''उसका अनादर'' होगा।

सेनापति के चेहरे पर यह पूछते हुए कि ''सब कुशल क्षेम तो है?'' (5:21ग) चिंता दिखाई दे रही होगी। मैं गेहजी को पूरे वेग से भागने के बाद सांस रोकने की कोशिश करते देखता हूं। अन्त में वह उत्तर दे पाया, ''सब कुशल है'' (5:22क)।[5] फिर इस सेवक के होंठों से सावधानीपूर्वक गढ़े हुए झूठ शब्द एक के बाद एक निकले:

झूठ न. 1: ''मेरे स्वामी ने मुझे भेजा है,'' (5:22ख)।

झूठ न. 2: ''[एलीशा ने तुझ से यह कहने को कहा है] 'एप्रैम के पहाड़ी देश से भविष्यवक्ताओं के चेलों में से दो जवान मेरे यहां अभी आए हैं, ...' '' (5:22ग)। (यह काल्पनिक जवान बेतेल की पाठशाला से आए होंगे।)

झूठ न. 3: ''[एलीशा ने यह विनती की है:] 'उनके लिए एक किक्कार चान्दी और

दो जोड़े वस्त्र दे''' (5:22घ)। (गेहजी और चाहता होगा पर उसका लोभ एक विश्वसनीय कहानी बताने के लिए आवश्यकता के द्वारा कम कर दिया गया।)

नामान के पास गेहजी पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था और उसे उसकी विनती से अच्छा ही लगा होगा। उसे तो साकार रूप में अपना धन्यवाद व्यक्त करने का अवसर मिल गया। गेहजी ने चांदी का एक किक्कार मांगा था, पर नामान ने उसे दो देने की पेशकश की (5:23क)। सेवक उस पेशकश से प्रसन्न हो जाता पर पूर्वी शिष्टाचार इस बात की मांग करता था कि वह इस बात का इनकार करे। नामान ने इस संस्कार में अपना योगदान दिया और स्वीकार करने का ''उससे आग्रह किया''[6] (5:23ख)। औपचारिकताएं पूरी होने पर गेहजी ने ''झिझकते हुए'' मान लिया, सो नामान ने कपड़ों के साथ दो थैलों में चांदी के दो किक्कार रखने का आदेश दिया (5:23ग)। ये चीज़ें 120-150 पौंड के लगभग (55-68 किलोग्राम) तक भार की होंगी, जिस कारण उसने एलीशा के पास उन उपहारों को ले जाने में सहायता के लिए दो सेवकों के ठहराया (5:23घ)।

अन्त में गेहजी और नामान के सेवक ''टीले'' तक पहुंच गए (5:24क)। ''टीला'' के लिए चाहे इब्रानी शब्द अस्पष्ट है।[7] (KJV में ''टावर'' है) इस शब्द का इस्तेमाल सम्भवतया नगर के थोड़ा बाहर ''प्रसिद्ध पहाड़ी'' के लिए है।[8] गेहजी ने उन लोगों को आगे बढ़ने की अनुमति देने का साहस नहीं किया। यदि वे नगर के पास पहुंच जाते तो लोग उन्हें देख सकते थे और फिर सवाल पूछ सकते थे। इसके अलावा नामान के सेवक एलीशा के घर तक नहीं गए, उन्हें दो युवा प्रशिक्षार्थियों से मिलने को कहा गया हो सकता है, जो एलीशा से भेंट के लिए आए थे।

गेहजी ने उन आदमियों को रोककर नामान के पास वापस भेज दिया (5:24घ)। उसने सम्भवतया कुछ इस प्रकार से कहा होगा: ''मैं यहीं से ले सकता हूं, पर आपकी सहायता के लिए धन्यवाद। मुझे मालूम है कि नामान को घर पहुंचने की जल्दी है, सो आप कारवां में जाकर मिल जाएं। नामान को फिर से यह बताना न भूलें कि नबी को इससे कितनी सहायता मिलनी थी।'' वे आदमी हैरान हो गए। उन्होंने अपने थैले गेहजी को दिए (5:24ख) और चले गए (5:24ङ)।

वचन कहता है कि गेहजी ने ''[उपहारों] को घर में रख दिया'' (5:24ग)। यह उस क्षेत्र का कोई और घर हो सकता है, पर सम्भवतया यह वह छोटा सा घर था, जिसमें गेहजी अपने स्वामी के साथ रहता था। मैं इस शृंखला की कल्पना करता हूं:

> गेहजी दोनों हाथों में बड़ा भारी थैला उठाकर पहाड़ी से मुश्किल से नीचे आया। वह नगर के बाहर पहुंचा और तंग गलियों के बीच में से जाने लगा। बीच-बीच में वह सांस लेने और दर्द कर रहे पट्ठों को आराम देने के लिए रुक जाता। अन्त में वह घर पहुंच गया। बोरों को नीचे रखते हुए उसने सामरी का दरवाज़ा खोला और अंदर झांका। एलीशा नज़र नहीं आया। अच्छा है! उसने थैले उठाए और उस ओर चला गया जहां वह सोता था। उसने बोरों को कोने में रखे, उन्हें पुराने कपड़े से ढांपा और अपना काम देखने के लिए पीछे चला गया। बहुत अच्छे! किसी को शक नहीं होगा कि इन चिथडों के नीचे खज़ाना छिपा है। उसने राहत की सांस ली। उसने कर दिखाया था! उसने नामान को लूट लिया था (जिसका वह सिपाही हकदार था) और साथ ही अपने आपको एक

धनवान व्यक्ति बना लिया था। उसके मन में ख्याल आने लगे कि सोने और चांदी तथा उन कीमती कपड़ों की बिक्री से वह क्या-क्या खरीद सकता था।[9] वह धनवान ज़मींदार बन सकता है और उसके पास ''दाख की बोरियां, चांदी व वस्त्र जलपाई वा दाख की बारियां, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और दास-दासी होंगे?'' (आयत 26ग)। वह ''दास दासी'' खरीद सकता था (आयत 26घ)। दास होने की जगह उसके अपने दास होने थे! परन्तु वह एलीशा को शक नहीं दिलाना चाहता था। वह पहले ही काफ़ी दूर चला गया था। उसने अपने कपड़े सीधे किए, अपने लिबाज़ से मिट्टी झाड़ी, अपनी भंवें ठीक कीं, बालों और दाड़ी में हाथ फेरा और एलीशा को ढूंढ़ने निकल गया।

भोला बनने की कोशिश में ''वह भीतर जाकर, अपने स्वामी के साम्हने खड़ा हुआ'' (5:25क)। जब मैं लड़का था और कोई गलती करता था तो मेरी मां सामने आ जाती। मैं गलती छिपाने की बड़ी कोशिश करता! आपको भी बचपन का कोई ऐसा अनुभव याद होगा।

एलीशा ने पूछा, ''हे गेहजी तू कहां से आता है?'' (5:25ख)। उसने उत्तर दिया, ''तेरा दास तो कहीं नहीं गया'' (5:25ग)। पहले गेहेजी ने तर्क दिया होगा कि घृणित शत्रु से झूठ बोलने में कोई नुकसान नहीं है, परन्तु अब वह परमेश्वर के व्यक्ति से झूठ बोल रहा था! झूठ बोलने के साथ एक दिक्कत यह भी है कि एक बार आदमी झूठ बोलने लग पड़े तो वह झूठ बोलता ही जाता है; उसे अपने पुराने झूठ पर पर्दा डालने के लिए नया झूठ बनाना पड़ता है। एक झूठ दूसरे झूठ को जन्म देता है, ''हां कितना उलझन भरा जाल हम बुला लेते हैं जब पहले धोखा देने का अभ्यास करते हैं!''[10] गेहजी ईमानदारी की परीक्षा में असफल हो गया था।

मुझे लगता है कि बहुत से लोग आज भी उसी परीक्षा में असफल हो रहे हैं यानी बेईमानी की भरमार लगती है। स्पष्टतया गेहजी को लगा कि किसी काफ़िर के साथ झूठ बोलने में कोई बुराई नहीं है और एक दिन (जो) सम्भवतया अपने आप को ''ईमानदार'' लोग समझते हैं। स्पष्टतया उन्हें कुछ परिस्थितियों में झूठ बोलने की कोई दिक्कत नहीं होती। जैसे अपने इन्कमटैक्स के बारे में सरकार से झूठ बोलना, गाड़ी तेज़ चलाने पर सिपाही द्वारा रोके जाने पर झूठ बोलना, छल पूर्वक दावों में पड़ी कम्पनियों से झूठ बोलना। परन्तु झूठ चाहे किसी से भी बोला जा रहा हो, झूठ तो झूठ ही है। बाइबल आज भी यही ऐलान करती हे कि ''सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

हम सब को पौलुस के शब्दों में यह चुनौती मिलती है: ''झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक-दूसरे के अंग हैं'' (इफिसियों 4:25क)। फिर उसने ज़ोर दिया ''प्रेम में सच्चाई से चलते'' चलना चाहिए (इफिसियों 4:15)। कइयों को ईमानदार होना दूसरों से अधिक कठिन लगता है, परन्तु कहीं न कहीं हम सभी को ईमानदारी की परीक्षा देनी पड़ेगी। आम तौर पर झूठ लाभ पाने या अपने कामों के परिणामों से बचने के लिए बोला जाता है। अगली बार जब आपको सच बोलने के बजाय झूठ बोलना लाभदायक या कम कष्टदायक लगे तो अपने आप गेहजी के झूठ के परिणामों को याद दिला दें। परमेश्वर झूठ बोलने को हल्के से नहीं लेता बल्कि वह ''झूठ बोलने वाली जीभ'' (नीतिवचन 6:16, 17) से घृणा करता है!

लोभ की परीक्षा

जब गेहजी ने इस पर झूठ बोला कि वह कहां था, तो सम्भवतया उसे यह उम्मीद होगी कि यह उन अवसरों में एक है जब परमेश्वर तथ्यों को उसके स्वामी से छिपा लेगा (देखें 4:27) परन्तु ऐसा हुआ नहीं। प्रभु ने एलीशा पर सब कुछ प्रगट कर दिया। नबी ने उससे कहा, ''जब वह [नामान] पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझ से मिलने को अपने रथ पर से उतरा, तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था'' (5:26क; यूहन्ना 1:48 से तुलना करें)। गेहजी का काम प्रकट हो गया था।

एलीशा ने पूछा, ''क्या यह समय चान्दी या वस्त्र ... लेने का है?'' (5:26ख)। नबी ने वह धन के लिए अपने सेवक की योजनाओं को पढ़ लिया था: ''क्या यह समय चान्दी या वस्त्र या जलपाई या दाख की बारियां, भेड़-बकरियां, गाय-बैल और दास-दासी लेने का है?'' (5:26ख, ग)। इस प्रकार गेहजी का लालच सामने आ गया।

यह समय नामान को यह दिखाने का *था* कि परमेश्वर के दास इस्राएल और अराम के झूठे भविष्यवक्ताओं से अलग हैं। परमेश्वर के दास धन से नहीं खरीदे जा सकते। यह समय परमेश्वर के अनुग्रहकारी होने का व्यक्तिगत लाभ लेने का *नहीं* था। यह समय झूठ बोलने और छल करने का *नहीं* था, बल्कि इस बात के लिए कतई समय *नहीं* है।

बाइबल हमें यह नहीं बताती कि गेहजी इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचा जहां उसका लालच इतना बढ़ गया कि वह इसे संतुष्ट करने के लिए लगभग कुछ भी करने को तैयार था। शायद उसने एलीशा के साथ अपनी शागिर्दी का आरम्भ बड़े ज़ोर से किया था। शायद उसे लगा कि नबी के साथ होना जीवन को आसान बना देगा। यदि ऐसा था तो वह जल्द ही भ्रम में पड़ गया होगा। मैं उसके यह सोचने की कल्पना कर सकता हूं, ''हमारे पास कितना कम है और जब कोई हमें कोई चीज़ देता है, तो एलीशा उसे मना कर देता है [देखें 4:42]! यदि मेरे स्वामी को ज़रा भी कारोबारी समझ होती तो हम दोनों अमीर बन सकते थे!'' फिर मैं कहता हूं कि हम नहीं जान सकते कि गेहजी के मन में क्या था, पर इतना जान सकते हैं कि वह लोभ की परीक्षा में असफल बल्कि बड़ी बुरी तरह से असफल हुआ था।

समय के आरम्भ से ही लोभ (लालच) मनुष्य की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक रहा है। पुराने नियम में दस आज्ञाओं में से सबसे अन्तिम आज्ञा थी कि ''लालच न करना ...'' (निर्गमन 20:17)। नये नियम में यीशु ने कहा, ''चौकस रहो, और हर प्रकार के लोग से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता'' (लूका 12:15)। मनुष्य जाति के पापी होने का वर्णन करते हुए पौलुस ने कहा कि लोभ ''लोभ से भरपूर हो गए'' (रोमियों 1:29), उसने यह भी लिखा कि ''मनुष्य ... परमेश्वर के नहीं वरन सुख विलास के ही चाहने वाले होंगे'' (2 तीमुथियुस 3:2-4)।

कोई भी लोभ के पाप से बच नहीं सकता। निर्धनों के पास आमतौर पर वह नहीं होता, जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है, और धनवानों के पास वह सब नहीं होता है जिनकी उन्हें इच्छा होती है। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक हम में से हर किसी को चुनौती देता है: ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उसने आप ही कहा है, मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5)। एलीशा को मालूम था कि गेहजी का मन लालच से कब भर गया और प्रभु को मालूम होता है जब हम हर जगह

पाए जाने वाले लोभ के आगे दम तोड़ देते हैं: ''और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है बरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुली और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:13)। लोभ की परीक्षा पड़ने पर प्रभु हम सब की मदद करे।

गेहजी की त्रासदी (5:27)

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अपनी बेइमानी का पर्दाफाश होने पर गेहजी को कैसा लगा, यानी वह कितना परेशान हुआ होगा? परन्तु इससे भी बदतर तो अभी आने वाला था। एलीशा ने आगे कहा, ''इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को[11] सदा लगा रहेगा'' (2 राजाओं 5:27क)। कइयों ने इसे ''शायराना न्याय'' कहा है; अन्यों ने ध्यान दिया है कि ''दण्ड अपराध के अनुकूल ही था।''

कोई विरोध कर सकता है ''एक मिनट रुकना'' मैं समझ सकता हूं कि गेहजी को दण्ड क्यों दिया जाना चाहिए, परन्तु उसके वंश को दण्ड क्यों? वे तो अपराधी नहीं थे। मूसा की व्यवस्था कहती थी कि परमेश्वर ''जो [उस] से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड'' देगा (निर्गमन 20:5; देखें निर्गमन 34:7; गिनती 14:18; व्यवस्थाविवरण 5:9)। क्लाइट मिलर ने सुझाव दिया है, ''कठोर दण्ड का अर्थ शायद इस तथ्य को दिखाना है कि पाप कितना खतरनाक है कि यह पापी को ही नहीं बल्कि उसके आगे भी नुकसान पहुंचाता है।''[12] एफ़. डब्ल्यू. क्रमचर ने केवल इतना लिखा, ''जो परमेश्वर से झगड़ा करना चाहते हैं उन्हें करने दें।''[13]

शायद मुझे यह ज़ोर देना चाहिए कि बच्चों को अपराध के परिणाम भुगतने पड़ेंगे न कि उस अपराध का दण्ड। आज हम मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। परन्तु अपने बारे में विचार करते हुए हम पाते हैं कि आज भी यह बात सच है कि ''पूर्वजों का पाप'' (निर्गमन 20:5; NIV) आम तौर पर उनके बच्चों में पाया जाता है:

- गाली-गलौज करने वाले माता-पिता का बच्चा अपने बच्चों के लिए गाली गलौच करने वाला ही होता है।
- तलाकशुदा माता-पिता के बच्चे का अधिकतर तलाक ही होता है।
- शराबी का बच्चा आम तौर पर शराबी ही होता है।

क्या मैं यह कह रहा हूं कि यदि आपके माता-पिता या उनके माता-पिता ने कोई विशेष पाप किया तो आप उसी पाप को करने से अपने आपको रोक नहीं सकते; नहीं! परमेश्वर की सहायता से आप इस चक्र को तोड़ सकते हैं। मेरे कहने का अर्थ यह है कि पाप करने से पहले आपको न केवल स्वयं के लिए बल्कि दूसरों के लिए भी उसके परिणामों पर विचार करना आवश्यक है। उससे दुखी होने वाले लोग वे हो सकते हैं जिन्हें आप सबसे अधिक प्रेम करते हैं!

निर्णय दिया जा चुका था और दण्ड उसी समय लागू हो गया। गेहजी ''हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर [एलीशा] के सामने से चला गया'' (2 राजाओं 5:27ख; गिनती 12:10 से तुलना करें)। एक झटके में गेहजी के लालची सपने धुआं हो गए। उसने कभी अमीर जिमींदार नहीं बनना था न उसके अपने सेवक होने थे। इसके बजाय जीवन के शेष वर्षों में उसने अकेला और निकाला

हुआ होना था। जो ऐसा व्यक्ति था जिसे कोई छूना न चाहे।[14]

संसार पाप को हल्के से लेता है और इस विचार का मज़ाक उड़ाता है कि पाप करने का परिणाम दण्ड होगा। गेहजी के गले और उतर रहे मांस को देखें तो आपको पता चलेगा कि ''विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है'' (नीतिवचन 13:15; KJV)। आज दण्ड आम तौर पर शारीरिक नहीं, बल्कि आत्मिक होता है; परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दण्ड दिया जाना कम हो गया है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23क) यानी आत्मिक मृत्यु (देखें इफिसियों 2:1), जो कि परमेश्वर से अलग होना है (यशायाह 59:2; 2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। यीशु ने उनके लिए जो ''[अपने] पाप में मरते हैं'' कहा कि ''जहां [स्वर्ग] मैं जाता हूं, वहां तुम नहीं आ सकते'' (यूहन्ना 8:21)।

यदि आपके जीवन में क्षमा न किया जाने वाला पाप है तो आप एक पल भी रुके नहीं, हिचकिचाएं नहीं, बल्कि अपने आपको अभी परमेश्वर के अनुग्रह पर डाल दें! ''जब-जब यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो'' (यशायाह 55:6)! यूहन्ना ने लिखा, ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है'' (1 यूहन्ना 1:9)। अपने पाप को मान लें और उसकी इच्छा को पूरी करें तो वह आपके जीवन में आशीष देगा। इससे पहले कि देर हो जाए अभी निर्णय करें (इब्रानियों 3:13; 2 कुरिन्थियों 6:2)!

सारांश

2 राजाओं 5 पर अपने अध्ययन में हमने नामान और गेहजी के अन्तर को देखा है। आज आप नामान के जैसे हो सकते हैं, आप पाप के कोढ़ से शुद्ध हो सकते हैं। ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)। मसीह अपने लहू के द्वारा आपको शुद्ध कर सकता है (1 पतरस 1:18, 19)। आज ही उसके पास आ जाएं!

टिप्पणियां

[1]यह कथन चार्ल्स स्विंडल, नामान एण्ड गेहजी: करेक्टरज़ इन कंट्रासट, क्लेरेडियो सरमन, तिथि नहीं द्वारा दिया गया था। [2]*दि इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:423 में एम. ए. मैक्लोड, ''गेहजी।'' [3]*दि जौंडरवन पिक्टोरियल इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ द बाइबल,* संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1976), 2:670 में एम. आर. विल्सन, ''गेहजी।'' अगले पाठ में यह कहानी दी गई है। [4]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिस्टिकंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2002), 36. [5]नामान और गेहजी दोनों ने *शालोम* के एक रूप का इस्तेमाल किया (एडम क्लार्क, *दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स,* अंक 2, *जोशुआ-एस्तर* [न्यू यॉर्क: अबिंग्डन-कोकस्बरी प्रैस, तिथि नहीं], 499)। [6]''उसने उनसे बहुत विनती करके'' शब्दों का अर्थ है कि गेहजी ने पहले पारम्परिक संसार के भाग के रूप में इनकार कर दिया। [7]क्लाइड एम. मिलर, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991), 337. [8]सी. एफ. केल एंड एफ़. डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेम्याह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 322. [9]अधिकतर लेखकों का मानना है कि आयत 26 में एलीशा के शब्द इस बात का संकेत देते हैं कि गेहजी के मन में यह बात थी।

एक प्राचीन तारगमों में जोड़ा गया है, ''उसके मन में ऐसा करने का विचार था'' (देखें क्लार्क, 499)। (तारगम पुराने नियम के भाग के अरामी भाषा में अनुवाद को कहा जाता है। ये अनुवाद पवित्र शास्त्र के वाक्य बनाकर व्याख्या देते हैं।) [10]सर वाल्टर स्कॉट, *मैरमियोन* [1808], 6.17; जॉन बार्टलेट, *बार्टलेट'स फैमिलियर कोटेशंस,* सोलहवां संस्क, संपा. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कं., 1992), 378 में उद्धृत।

[11]यह देखा गया है कि यदि गेहजी का विवाह न होता तो उसकी कोई संतान नहीं होनी थी जिसे कोढ़ हो जाए। ऐसा होगा नहीं कि कोई किसी कोढ़ी से विवाह करे, इसलिए ऐसा हो सकता है। [12]मिलर, 337. [13]एफ. डब्ल्यू. क्रूमाचर, *एलीशा, ए प्रोफेट .फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 218. [14]एक लेखक ने सुझाव दिया कि गेहजी ने अपने पाप से मन फिराया और मिरियम की तरह उसे शुद्ध कर दिया गया (गिनती 12:10-15)। यह निष्कर्ष मुख्यतया अध्याय 8 में राजा के सामने गेहजी के जाने पर आधारित था। परन्तु जैसा पहले देखा गया है, 8:1-6 की घटनाएं सक्रमभवतया 4:38 वाले अकाल से जुड़ी हैं और इस कारण निश्चित रूप से नामान की कहानी से पहले घटी होंगी। बाइबल यह नहीं बताती कि एलीशा के सामने चले जाने के बाद गेहजी का क्या हुआ।